International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 16-01-2019; Accepted: 18-02-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 19-21

खजुराहो : पर्यटन केन्द्र के रूप में विकास का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० नृपेन्द्र सिंह परिहार
प्राचार्य, डी०आर०एस० बी०एड० कालेज, गंगापुर, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र में खजुराहो : पर्यटन केन्द्र के रूप में विकास का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। वर्तमान में खजुराहो नगर के विकास में पर्यटन उद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह एक ऐसा उद्योग है जिसका कि यहां की अर्थव्यवस्था के विभिन्न अंगों से गहरा सम्बन्ध है। इससे एक ओर जहां राजस्व की प्राप्ति होती है, वहीं दूसरी ओर इससे खजुराहो अंचल के बेरोजगार युवकों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं। विदेशी मुद्रा कमाने के दृष्टिकोण से भी इस उद्योग का बहुत महत्व है। पर्यटन न केवल बिना किसी वस्तु के निर्यात के करोड़ों रुपयों की विदेशी मुद्रा का संचय कर देता है, बल्कि हमारी संस्कृति के प्रचार को भी बिना किसी अतिरिक्त श्रम के विदेशों में पहुंचा देता है। इस तरह वह एक ऐसा क्रियाकलाप है जो केवल आर्थिक महत्व का ही नहीं बल्कि सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक दृष्टिकोण से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इससे होने वाले लाभों की ओर आकृष्ट होकर अनेक क्षेत्रों में पर्यटन विकास कार्यों को आरंभ किया गया है।

मूल शब्द : खजुराहो, पर्यटन केन्द्र, विकास, ऐतिहासिक अध्ययन।

प्रस्तावना
खजुराहो के मन्दिरों को 1000 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में वर्ष 1999 को 'भारत देखों सहस्राब्दि वर्ष' के रूप में भारत सरकार द्वारा घोषित किया गया था। इस घोषणा का उद्देश्य खजुराहो सहित देश के सभी प्रमुख पर्यटन केन्द्रों में अन्तर्देशीय एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करना था। इस उपलक्ष्य में खजुराहो नगर में वर्ष भर किसी न किसी प्रकार के विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसके परिणाम उत्साहवर्द्धक थे।
नई शताब्दी के द्वार पर खड़े भारत वर्ष में पर्यटन एक बृहद उद्योग के रूप में उभर रहा है। जॉन नैसविट ने अपनी पुस्तक 'ग्लोबल पैराडाक्स' में कहा है कि 'भविष्य में एकमात्र प्रभावक क्रांति दूरसंचार के क्षेत्र में होगी और 21वीं शताब्दी का सबसे बड़ा उद्योग यात्रा एवं पर्यटन उद्योग होगा।'[1] भविष्य में तीन क्षेत्रों पर ध्यान दिया जायेगा, बिल गेट्रस ने पर्यटन को उसमें से एक बताया है।[2] विश्व पर्यटन संस्थान तथा विश्व पर्यटन यात्रा परिषद ने भविष्य के जो अनुमान प्रस्तुत किए है, उसके अनुसार सन् 2020 तक विश्वभर में आने जाने वाले पर्यटकों की संख्या 1.6 विलियन होगी और वे इस मद में 2000 विलियन डालर खर्च करेंगे। पर्यटन की ऐसी आकर्षक गतिविधि के लिए हमारा देश पर्यटन के विविध एवं आकर्षक आयाम प्रस्तुत करता है। मार्क ट्रवेन में शब्दों में 'हिन्दुस्तान वह देश है जिसे देखने को लालायित रहते है और जिसकी एक झलक देख लेने के पश्चात् दुनिया के अन्य सभी दृश्य फीके पड़ जाते है।[3] उपरोक्त वाक्य एवं अनुमान पर्यटन के महत्व को प्रतिपादित करते है।
पर्यटन इतिहास की एक नवोदित शाखा है, पिछले कुछ वर्षो से इतिहास के अध्ययन क्षेत्र में जो बहुआयामी विस्तार हुआ है तथा अध्ययन की जो नूतन प्रवृत्तियाँ उभरी है, उन्हीं के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक पर्यटन, वास्तुकला, सौन्दर्य एवं प्राचीन विरासत एवं पर्यटन जैसी नई शाखाओं का विकास हो रहा है।[4]
उपनिवेशवाद की समाप्ति के बाद आवागमन तथा दूरसंचार के साधनों का द्रुतगति से विकास, शीतयुद्ध की समाप्ति, विभिन्न देशों की पारस्परिक आर्थिक निर्भरता, राजनैतिक समरसता तथा आर्थिक एवं व्यापारिक उदारीकरण के कारण अन्तर्राष्ट्रीय यात्राओं में वृद्धि हुई है। इसी के परिणामस्वरूप पिछले 50 वर्षो से पर्यटन जैसी गतिविधियाँ दिन दूना, रात्रि चौगुना' की गति से बढ़ रहा है।

पर्यटन का इतिहास व अर्थ
आदिकाल से लेकर अब तक जब से मानव जाति ने धरती पर जन्म लिया है, मानव की प्रवृत्ति भ्रमणशील रही है, प्रकृति ने समय तथा काल की गति के अनुसार परिवर्तन के साथ मानव को भ्रमण के लिए बाध्य किया है। विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक विभिन्नता तथा तत्सम्बन्धी आकर्षक पर्यटन की आधार शिला है तथा यही तत्व मानव हेतु प्रेरणा स्त्रोत होते हैं, जिससे पर्यटन का जन्म तथा विकास होता है।[5]
मानव स्वभाव से ही जिज्ञासु होता है तथा अपनी इस जिज्ञासा के पूर्ति हेतु वह न केवल अपने दायरे या देश तक सीमित रहता है बल्कि उसे बाहर देखने या परखने की लालसा बनी रहती है जो उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसी लालसा एवं स्वाभाविक प्रवृत्ति का प्रतिफल अर्थात क्रियात्मक रूप है 'पर्यटन'। पर्यटन का सामान्य अर्थ सुविधानुसार या अवकाश के क्षणों में दृश्य सौन्दर्य स्थल या रूपों का थोड़े समय के लिए भ्रमण करना है।
जेम्स फिशर के अनुसार पर्यटन वह संसाधन है जो मानव की आवश्यकताओं, रुचियों एवं इच्छाओं की पूर्ति करता है।[6] सामान्यतौर पर पर्यटन को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है "लगातार एक वर्ष या उससे कम समय तक सैर–सपाटे, व्यापार, धार्मिक तथा अन्य कार्यों के लिए अपने रहने के स्थान से बाहर घूमने से सम्बन्धित गतिविधि को पर्यटन कहा जाता है।" लीग ऑफ नेशन्स के अनुसार वर्ष 1934 में लिए गए निर्णय के आधार पर पर्यटन की परिभाषा के अन्तर्गत वे यात्री आते है जो अपने निवास स्थान से बाहर किसी देश की यात्रा पर कम से कम 24 घण्टे के लिए जाते है।
यूनाइटेड नेशन्स रोम कान्फ्रेस (1963) के अनुसार संयुक्त राष्ट्र के सम्मेलन में विचारोपरान्त एक संशोधित परिभाषा तैयार की गई जिसकी विश्व के अधिकांश राष्ट्र मानते है तथा आंकड़ों के संग्रहण में इसका प्रयोग किया जाता है इसके अनुसार "कोई भी यात्रा जो व्यापारिक लाभ कमाने के अतिरिक्त अन्य कारणों से अपने निवास के बाहर किसी देश में की गई हो पर्यटन की श्रेणी

में आती है।"

मनुष्य जन्म से ही एक कौतूहल प्रिय प्राणी है, सृष्टि की असीम सम्पदा के अवलोकन से ही उसने नवीन अनुभव किए। ऐतिहासिक काल के प्रारंभ से ही हमारे पूर्वजों ने यात्रा का सिलसिला प्रारंभ कर दिया था। ये यात्री प्रमुखतः व्यापारी, धर्मयात्री या ज्ञानोत्सुक विद्वान थे, जो नवीन और रोमांचक अनुभवों के प्रति सदैव उत्सुक रहते थे। धन और सम्पदा के अर्जन के लिए तथा धार्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु व्यापारी एवं धार्मिक यात्री सुदूर देशों की अनेक रोमांचक यात्रायें आरंभ की। इन प्राचीन यात्रियों के प्रयासों से धीरे–धीरे नये–नये मार्गों की खोज हुई जिससे यात्रा के लिए विशेष प्रेरणा एवं सुविधायें प्राप्त हुई। धार्मिक केन्द्रों, व्यापारिक स्थलों एवं नगरों ने परस्परिक धार्मिक यात्रायें, व्यापार एवं वाणिज्य को तो प्रोत्साहन दिया है पर इसके साथ–साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान का सिलसिला आरंभ हुआ। इस प्रकार विविध प्रकार की यात्रायें एक अनुभवगम्य एवं विशेष ज्ञान परिवर्धक विषय बन गई।

वर्तमान समय में पर्यटन विश्व का एक बड़ा ही प्रभावशाली उद्योग हैं, ज्ञानवर्धन तथा भावनात्मक एकता के लिए पर्यटन का प्राचीनकाल से ही एक विशिष्ट स्थान रहा है। पर्यटन से आज विश्व को लगभग 25 हजार करोड़ रुपयें की आय है। इस आय को खर्च करने वालों की संख्या 22 करोड़ है। पर्यटन से न केवल परिवहन के साधनों को प्रोत्साहन मिलता है अपितु विभिन्न औद्योगिक संस्थाओं को यथा फलोत्पादन, कृषि, हस्तकारी, होटल, सड़क, मनोरंजनात्मक साधनों, दिग्दर्शकों तथा यात्रा अधिकर्ताओं एवं अन्य उपयोगी सेवाओं को भी प्रोत्साहन मिलता है। पर्यटन क्रियाएँ, पर्यटक आय के दृष्टिकोण से भी काफी महत्वपूर्ण है। पर्यटकों द्वारा आरामदायक वस्तुओं पर किया गया खर्च फुटकर विक्रेताओं, निर्माताओं एवं भोजनालयों तथा परिवर्तन सहित अन्य व्यावसायिक वगों के लिए आय सृजित करती है।

इसमें कोई शक नहीं है कि पर्यटकों को परिवहन के साधन अथवा आवास उपलब्ध कराने अथवा उनकी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए औद्योगिक उत्पादों का सदुपयोग किया जाता है। परन्तु इस सबके बावजूद एक मानवीय क्रियाकलाप ही है जो सेवा के क्षेत्र से सम्बद्ध है और यह किसी भी देश के आर्थिक विकास में उद्योग अथवा कृषि के क्षेत्रों में बढ़कर योगदान दे सकता है।[7] पर्यटन उद्योग आज न केवल भारत में अपितु पूरी दुनिया में अग्रणी बन चुका है तथा हमारा देश भी पर्यटन उद्योग के माध्यम से मुद्रा कमाने वाले देशों की श्रेणी में आ चुका है।

किसी भी स्थान की विशेषतायें दूसरे स्थान के नागरिकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। भारत एक विशाल देश हैं, यहां की विविधतायें एवं विभिन्नतायें अपने आप में अन्य क्षेत्रों के लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। इस तरह देश तथा विश्व पर्यटन मानचित्र में खजुराहों नगर की महत्वपूर्ण स्थिति है। पर्यटन संसाधनों की यहां कमी नहीं है। यहां की सदियों पुरानी सभ्यता, वैविध्यपूर्ण छटा, तरह–तरह के स्वादिष्ट व्यंजन, प्राचीन मंदिर, स्मारक, भव्य इमारतें, आकर्षक किले, विभिन्न जाति तथा धर्म के लोग और उनकी अलौकिक भिन्न–भिन्न संस्कृतियाँ पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

पर्यटन के लाभ व हानि

वर्तमान यात्राओं व नये पर्यटन के कारण खजुराहों में सामाजिक परिवर्तन हुए है। जिन पर यहाँ के समाज को कुछ लाभ भी हुए है तो कुछ हानियां भी। यदि ध्यान से देखा जाये तो प्रतीत होता है कि उतने लाभ यहां के समाज को इनसे प्राप्त नही हुए जितने कि होने चाहिए थे या हो सकते थे। इसका एकमात्र कारण नियोजन की कमी ही प्रतीत होती है। संक्षेप में इनसे होने वाले लाभों को निम्न तालिका से प्रदर्शित कर सकते है–

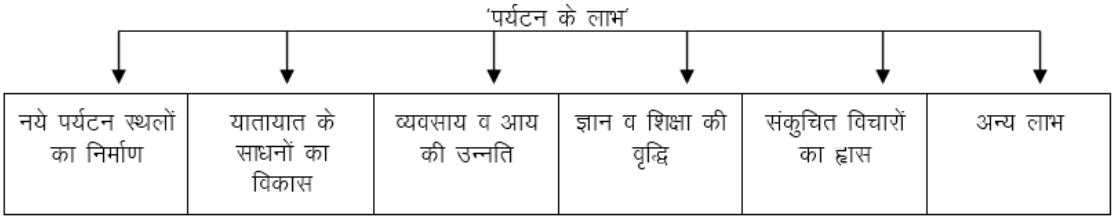

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि वर्तमान धार्मिक यात्राओं व पर्यटन के बहुत लाभ हुए है। यातायात के साधनों का विस्तार हुआ है जिससे जन जीवन सुविधापूर्ण हुआ है। रोजगार के अधिक अवसर मिले है। कई कष्टदायक प्रथायें समाप्त हुई है। पर्यटक स्थलों के निर्माण होने से भी निश्चित रूप से रोजगार के अवसर तो मिलेंगे ही साथ ही आय में वृद्धि होगी। विभिन्न व्यवसायों की वृद्धि व उन्नति हुई है, हो रही है समाज में व्याप्त संकुचित विचारों का ह्रास हो रहा है और भी कई लाभ हुए है। इन तमाम लाभों के कारण सामाजिक व्यवस्था पर अच्छे प्रभाव पड़े है और समाज भी उन्नति की दिशा में अग्रसर हुआ है, हो रहा है। यह और भी अच्छा होता यदि नियोजन की उचित प्रणाली अपना ली जाती और वर्तमान धार्मिक व पर्यटन के और अधिक लाभ प्राप्त किये जा सकते है।

जहाँ वर्तमान यात्रायें व पर्यटन लाभप्रद सिद्ध हुआ है वहीं इनके कुछ गम्भीर परिणाम भी हुए है जो कि खजुराहो अंचल के समाज पर दृष्टिगोचर होते है। संक्षेप में इनमें से हुई हानियों को निम्न तालिका से देखा जा सकता है–

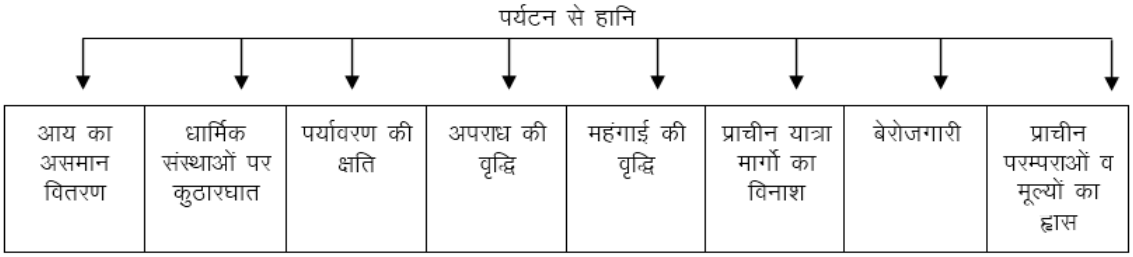

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि वर्तमान पर्यटन के कारण खजुराहो के समाज को कई हानियां हुई है। आय का असमान वितरण सबसे प्रमुख हानि है जबकि प्राचीन धार्मिक यात्रियों का यह सबसे प्रमुख लाभ था कि उनसे आय का समान वितरण होता था। पंडा प्रथा आदि को समाप्त करने में कहीं न कहीं इनका हाथ भी जरूर हैं। अधिक आवागमन के कारण, अवैज्ञानिक ढंग से निर्मित मोटर मार्गों के कारण व नये पर्यटक स्थलों का उचित ढंग से नियोजन न किये जाने के कारण पर्यावरण की क्षति हुई है। जंगलों का विनाश व भू–क्षरण जैसी विकट परिस्थितियां उत्पन्न हुई है। यात्रा मार्गों पर व्यापारियों की मनमानी से महगाई बढ़ी हैं, कई अपराधों की वृद्धि हुई है। प्राचीन यात्रा मार्गों का विनाश हुआ है, जिनके कारण आय का असमान वितरण तो हो रहा है लेकिन इन मार्गो पर व्यापार करने वाले लोगों का रोजगार समाप्त हुआ है जिससे बेरोजगार की समस्या खड़ी हुई है और पलायन होने लगा है, ये हानियां भी यहां के समाज पर व्यापक प्रभाव डाल रही है और समाज व्यवस्था पर दृष्टिगोचर हो रही हैं, नशे का प्रचलन बढ़ रहा है।

निष्कर्ष

पर्यटन की दृष्टि से खजुराहो नगर तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्र में असीमित संभावनायें हैं किन्तु विश्व पर्यटन की तुलना में यह क्षेत्र आपेक्षिक प्रगति नहीं कर पाया है। इस क्षेत्र में पर्यटन के इतने अधिक आकर्षण होते हुए भी न तो पर्यटकों की संख्या में विशेष बढ़ोत्तरी हुई है और न विदेशी मुद्रा अर्जन में प्रगति हो पायी है। प्रकृति प्रदत्त अनुकूल प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों को देखते हुये अपने देश तथा देश के हृदय में स्थित खजुराहो को एक आदर्श पर्यटन केन्द्र होना चाहिए था, किन्तु कई कारणों से ऐसा नही हो सका है। यदि कई क्षेत्र में दस्यु प्रभावित क्षेत्र इसके लिए जिम्मेदार रहा है तो कहीं पर्यटन के लिए आवश्यक बुनियादी सेवाओं का अभाव है। कहीं कई पर्यटक स्थलों की पहचान न हो सकना तो कहीं विदेशों में फैली हमारे बारे में प्रचलित भ्रांतियां भी आड़े आई है।

वर्तमान समय में प्रदेश व क्षेत्र की बढती हुई आबादी, रोजगार के सीमित साधन, बेरोजगारी की समस्या, रोजगार के अतिरिक्त अवसरों की उपलब्धता यहां की सबसे ज्वलंत एवं तात्कालिक आवश्यकता है। हमारे संविधान में नीति निर्देशक सिद्धांत एवं मौलिक अधिकारों के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने का उल्लेख किया गया है। अतः रोजगार की समस्या मानवाधिकार संरक्षण की आज चुनौती है, जिसकी पूर्ति खजुराहो पर्यटन केन्द्र किसी न किसी हद तक पूर्ण कर रहा है।

सन्दर्भ

1. योजना, अगस्त 1999, पेज 3.
2. सिंह, बी.पी., पर्यावरणीय विभिन्नताएँ एवं पर्यटन, पेज 13
3. योजना, अगस्त 1999, पेज 2.
4. द्विवेदी, आशुतोष, सतना जिले के धार्मिक आस्था के केन्द्रों पर पर्यटन का प्रभाव (2003), अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, अ.प्र. सिंह वि.वि., रीवा (म.प्र.)
5. सिंह, बी.पी., पर्यावरणीय विभिन्नताएं एवं पर्यटन, पेज 2.
6. तिवारी, बी.के., भारत का वृहद भूगोल, भाग एक, हिमालय पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पेज 670–671.
7. सिंह, नीतू, रीवा जिले के धार्मिक पर्यटन केन्द्रों का एक भौगोलिक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध (2001), शास. टी.आर. एस. महाविद्यालय, रीवा, पेज 3